साद्वैतं सावधूतं परिजनसहितं कृष्णचैतन्यदेवं।
श्रीराधाकृष्णपादान् सहगणललिताश्रीविशाखान्वितांश्च।।

मैं अपने गुरुदेव तथा सम्पूर्ण वैष्णववृन्द के पादपद्मों की आदरसहित वन्दना करता हूँ। श्रील रूप गोस्वामी, उनके अग्रज सनातन गोस्वामी, और रघुनाथ दास, रघुनाथ भट्ट, गोपाल भट्ट तथा जीव गोस्वामी की भी सादर वन्दना करता हूँ; सविनय श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभु, श्रीनित्यानन्द प्रभु तथा अद्वैतआचार्य, गदाधर, श्रीवासादि पार्षदों की वन्दना करता हूँ और अंत में श्रीललिता, श्रीविशाखा आदि सखियों के सहित श्री श्रीराधाकृष्ण की वन्दना करता हूँ।

हे कृष्ण करुणासिन्धो दीनबन्धो जगत्पते।
गोपेश गोपिकाकान्त राधाकान्त नमोऽस्तु ते।।

हे कृष्ण ! हे करुणासिन्धु ! हे दीनबन्धु ! हे जगत्पति ! हे गोपेश ! हे गोपिकाकान्त ! हे राधाकान्त ! मैं आपको सादर प्रणाम करता हूँ।

तप्तकाञ्चन गौरांगी राधे वृन्दावनेश्वरी।
वृषभानुसुते देवी प्रणमामि हरिप्रिये।।

तप्तकाचन सुवर्णा वृन्दावनेश्वरी, वृषभानुनन्दिनी, कृष्णप्रिया श्रीमती राधारानी को सादर प्रणाम करता हूँ।

वाञ्छा कल्पतरुभ्यश्च कृपासिन्धुभ्य एव च।
पतितानां पावनेभ्यो वैष्णवेभ्यो नमो नमः।।

श्रीभगवान् के वैष्णव भक्तों की वन्दना करता हूँ, जो सम्पूर्ण कामनाओं को पूर्ण करने में कल्पतरु के समान समर्थ हैं तथा पतित जीवों के लिए अहैतुकी कृपा से ओतप्रोत हैं।

श्रीकृष्ण चैतन्य प्रभु नित्यानन्द।
श्री अद्वैत गदाधर श्रीवासादि गौर भक्तवृन्द।।

श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभु, प्रभु नित्यानन्द, श्रीअद्वैत, गदाधर, श्रीवास तथा अन्य सभी भक्तों की मैं सादर वन्दना करता हूँ।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।